कुमार अंबुज की काव्य संवेदना

अरुण कमल के बाद अंतिम दशक के नवीनतम पीढ़ी के कवियों में कुमार अंबुज (११५७, मंगवार, गुना, मध्यप्रदेश) संभवतः वरिष्ठ कवि एवं कविता के आलोचक भी हैं। घर-परिवार, पास-पड़ोस, समाज, प्रांत और देश तक फैली इनकी कविताएँ एक नया संसार रचती हैं। कानून और वनस्पति विज्ञान की भाषा समझने वाला कवि अपने समय और साहित्य के प्रति सजग और सतर्क है। उनका कहना है-'उत्तरआधुनिक, उपभोक्तावादी, चरमपूँजीवादी इस समय ने कलाओं के सामने अस्तित्व का संकट इस मायने में अवश्य खड़ा किया है कि मनुष्य से, कला को दिया जा सकने वाला समय छीन लिया है। वह जीवित रह सके, इसी उपाय में उसकी अधिकतम शक्ति और समय जाया हो रहा है। इसी मायने में यह समय और यह व्यवस्था अधिक अमानवीय है।" कवि ने कला को बचाए रखने के लिए अपने समय की अमानवीयता को बड़ी पैनी दृष्टि से पकड़ा है। उनकी रचनाओं में प्रकृति, मनुष्य और समाज तीनों शामिल हैं। जिनमें, प्रेम, सौन्दर्य, संघर्ष और जीवन का संगीत है। वे मध्यवर्गीय संस्कारों का अतिक्रमण कर वास्तविक जीवन का यथार्थ चित्रण करते हैं। अंबुज राजनीति के चितेरे कम जीवन के अधिक हैं।

डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्र

जन्म
१२ जुलाई, १९५७

शिक्षा
एम.ए., पीएच.डी.

साहित्य
६ कृतियाँ प्रकाशित, ४० लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

सम्पर्क
१२८/१-एच/१,
२२, आजाद को-ऑपरेटीव
हाऊसिंग सोसायटी, कुरका
गोवा-४०३१०८

मो. ०९४०३२७२३०५

कुमार अंबुज की कविताएँ 'किवाड़' (१९९२), 'क्रूरता' (१९९६), और अनंतिम' (१९९८) काव्यसंग्रहों के माध्यम से पूरे अंतिम दशक में पसरी हुई होने के कारण तत्कालीन काव्य संवेदना को आसानी से परखा जा सकता है। इनकी कविताओं का अनुवाद जर्मन, रूसी और नेपाली भाषाओं में भी हुआ है। साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित हिंदी युवा कविता समारोह में काव्य पाठ के अतिरिक्त १९९४ में 'वसुधा' के समकालीन युवा कविता के विशेष अंक का संपादन। कुमार अंबुज की काव्यप्रतिभा के कारण उनको 'किवाड़' कविता के लिए १९९८ का भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार तथा 'किवाड़' संग्रह के लिए म.प्र. साहित्य परिषद् का १९९२ का माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार प्रदान किया गया।

"समकालीन कविता के पाठकों के लिए कुमार अम्बुज का नाम खासा जाना-पहचाना है। अपनी विशिष्ट स्थानीय रंगत के साथ जिन युवा कवियों का चेहरा अलग से दिखाई पड़ता है, उनमें वे अग्रिम पंक्ति के अन्यतम हस्ताक्षर हैं।" ('किवाड़'-कवर पृष्ठ-केदारनाथ सिंह) कुमार अबुज की 'किवाड़' और 'क्रूरता' संग्रह की कविताएँ किसी वाद, विचारधारा, राजनीति, सम्प्रदाय, धर्म, दलित एवं नारी विमर्श आदि विशेष खाँचे के अंतर्गत नहीं लिखी गई हैं। वे मूलतः घर-परिवार, पास-पड़ोस, देशकाल, रोजमर्रा जीवन की सहज अनुभूतियों पर केन्द्रित हैं। 'किवाड़' संग्रह के शीर्षक कविता की ही बात करें तो वह किस प्रकार घर-परिवार की सम्पूर्ण परंपरा और संस्कृति को अपने आप में समेटे हुए है।

ये सिर्फ किवाड़ नहीं हैं/जब ये हिलते हैं/माँ हिल जाती है
और चौकस आँखों से/देखती है-'क्या हुआ?'
मोटी सांकल की/चार कड़ियों में
एक पूरी उमर और स्मृतियाँ/बँधी हुई हैं
जब सांकल बजती है/बहुत कुछ बज जाता है घर में-[२]

प्रस्तुत संग्रह की अन्य प्रारंभिक कविताओं में कवि ने आधुनिक सभ्यता में बेतरतीब जीवन की चिंता, आत्मा के पवित्रता की खोज, जीवन के भय और अँधेरे में शक्ति और आत्मबल की तलाश, यथास्थिति का विरोध माता-पिता का प्रेम एवं उनकी नसीहतें, अक्तूबर मास के अंत में घर-संसार में होने वाली हलचलें, जीवन में जरा सी देर में होने वाले परिवर्तनों का (पंत के 'परिवर्तन' कविता की झलक) अवसरवादियों की अवसरवादिता आदि का चित्रण किया है। 'उदासी' कविता में कुमार अंबुज की प्रगतिशील दृष्टि एवं उनकी गहन संवेदना उभर कर आती है। जहाँ कवि की उदासी पतंग उड़ाने की उम्र में पतंग बना रहे बच्चों, गुड्डे खेलने के मौसम में बिस्तर पर पड़ी नग्न लड़कियों को देखकर उसकी आत्मा को इतना ठंडा कर देती है जितनी कि दिसम्बर की रात में छत पर पड़ी लोहे की कुर्सियाँ। वे इस उदासी को दूर करने के लिए थोड़े से हाथों का सहयोग माँगते हैं।

मैं इस जोंक-उदासी को
खींचकर फेंकना चाहता हूँ
और इसके लिए चाहिए फिलहाल मुझे
कुछ अँगुलियाँ थोड़े-से कुछ हाथ
और उम्मीद से भरी हुई थोड़ी-सी हिम्मत
धीरे-धीरे इस अतल उदासी में
फैल रही है एक आकांक्षा! [३]

इसी प्रकार 'भरी हुई बस में लाल साफेवाला आदमी', 'तुम्हारी जाति क्या है?', 'एक दीवार पर दो तलवारें देखकर', 'मुझे डर लगा', 'संभावना', 'पटरियाँ', 'बासा अखबार' आदि कविताओं में समसामयिक चेतना, जाति-धर्म, सम्प्रदाय आदि के प्रति कवि की प्रगतिशील दृष्टि मुखर हुई है। बस में सफर करने वाला 'लाल साफेवाला आदमी' अपनी ज़िन्दगी का मतलब जानना चाहता है कि क्या वह मात्र वोट डालने के लिए बना है?

वह जानना चाहता है उसकी ज़िन्दगी का मतलब
वोट डालने के अलावा और कहाँ है
लगान देने में पटवारी को रुपया देने में
हवलदार से डंडा खाने में
महज दो रोटी के लिए
दिन-रात हाड़ तोड़ने में?
और कहाँ है
कहाँ है उसकी ज़िन्दगी का मोल? [४]

कुमार अंबुज ने जहाँ 'कटे हुए खेत को देखकर', 'ये दिन बरसाती' आदि कविताओं में अपने आसपास के खेत-खलिहानों का चित्रण किया है, वहीं पर उनकी 'दो बूढ़ी स्त्रियों का मिलन', 'मोड़', 'सुबह के लिए', 'गाँव की याद में एक गीत', 'सड़क', 'बिजली का पंखा', 'त्यौहार और स्त्रियाँ', 'बारात', 'रात आधी है', 'प्रेम की तारीखें', 'फिर प्रेम की इच्छा में', 'अच्छे आदमी', 'पढ़ाई', 'काका को याद करते हुए', 'पिता का चेहरा' आदि कविताएँ क्रमशः लोकजीवन, प्रेम, मानवतावाद, पारिवारिक संवेदनाओं की कविताएँ हैं।

फिर बच्चों से बहस में/लगातार पिटते हुए पिता
चुप रहते हैं वहाँ भी/जहाँ बोलना चाहिए उन्हें
या लंबी साँस लेकर करते हैं/अम्मा की याद
जैसे भर लेंगे सारी ऑक्सीजन/खड़खड़ाते फेंफड़ों में एक साथ [५]

प्रस्तुत संग्रह की कविताएँ मुख्यतः नवें दशक के काल में लिखी गई हैं जिनमें कवि जीवन की अनुभूतियों के विविध रंग हैं। दरअसल कुमार अंबुज के दूसरे काव्यसंग्रह में वही रंग अधिक चटक हुए हैं। कवर पृष्ठ पर वरिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह ने भी लिखा है, "अब कवि की दृष्टि, अपनी पूरी कलात्मक क्षमता के साथ वहाँ केन्द्रित है, जहाँ हमारे समय की धड़कन सबसे तेज है। एक वयस्क नागरिक की तरह वह सबसे पहले देखता है अपनी ही नागरिक संवेदना का पराभव।...यहाँ कवि की सौन्दर्य-दृष्टि और विवेक दोनों अधिक प्रौढ़ हुए हैं।" संग्रह की शीर्षक कविता उक्त कथन की सार्थकता को प्रतिपादित करती है...।

तब आएगी क्रूरता
पहले हृदय में आएगी और चेहरे पर न दीखेगी
फिर घटित होगी धर्म-ग्रन्थों की व्याख्या में
फिर इतिहास में और फिर भविष्यवाणियों में
फिर वह जनता का आदर्श हो जाएगी
निरर्थक हो जाएगा विलाप

दूसरी मृत्यु थाम लेगी पहली मृत्यु से उपजे आँसू
पड़ोसी सांत्वना नहीं एक हथियार देगा। [६]

'क्रूरता' कविता की 'धीरे-धीरे क्षमाभाव समाप्त हो जाएगा/प्रेम की आकांक्षा तो होगी मगर जरूरत न रह जाएगी' पंक्तियाँ कुछ-कुछ अर्थ एवं लय की दृष्टि से 'अंधायुग' नाटक की उद्घोषणा के अंश से मिलती-जुलती है। 'उस भविष्य में/धर्म-अर्थ ह्रासोन्मुख होंगे/क्षय होगा धीरे-धीरे सारी धरती का/सत्ता होगी उनकी/जिनकी पूँजी होगी।' [७] आज क्रूरता-धूर्तता छल-कपट, हिंसा, दुराचार, आत्महीनता, मूल्यहीनता, संवेदनशून्यता, अमानवीयता आदि किस कदर बढ़ रही है, इसे बताने की जरूरत नहीं है। वह सब हमारी आँखों के सामने है। इसका एक प्रमुख कारण आज का बाजारवाद भी है। कवि की 'नागरिक पराभव', 'डर', 'उजाड़', 'इस तंत्र में नौकरी' आदि कविताएँ भी समसामयिक क्रूरता की स्थितियों का बयान करती हैं।

अंतिम दशक के अवसान पर कुमार अंबुज का तीसरा काव्यसंग्रह 'अनंतिम (१९९८) प्रकाशित हुआ। यहाँ कवि रोजमर्रा की अनुभूतियों के साथ अपने समय की मुश्किलों और चुनौतियों से टकराता है। प्रस्तुत संग्रह की प्रारंभिक कविताएँ 'एक राजनीतिक प्रलाप' एवं 'प्रधानमंत्री और शिल्पी' समसामयिक भारतीय स्थितियों का आकलन करती हैं। इनमें जहाँ आजादी के पचास वर्षों के बाद भी सरकार की योजनाएँ आम आदमी तक न पहुँच पाने के कारण करोड़ों बच्चों एवं लोगों के फैक्ट्रियों में झुलसने और गरीबी के नर्क में जीने की बात कही गई है, वहीं पर विडंबना इस बात की है कि उन्हीं जगहों से आए शिल्पियों को प्रधानमंत्री सम्मानित भी करते हैं।

ऐसे एकत्र हो गए शिल्पियों से प्रधानमंत्री ने कहा/मुझे गर्व है कि आप लोग शिल्पी हैं और तमाम कठिनाइयों के बीच कर रहे हैं काम/शिल्पियों में से एक-दो-ने कहा हिम्मत बटोर कर/हमें नहीं मिलती लकड़ी/लोहा और तांबा नहीं मिलता नहीं मिलते रंग नहीं मिलती मिट्टी तक/और जैसे-तैसे बना लें कुछ तो नहीं मिलती इतनी भी कीमत कि निकल सके लागत। [८]

इन दो कविताओं के बाद 'सापेक्षता', 'उसी एक क्षण ने', 'वे लताएँ नहीं' आदि में वे पुनः आसपास की अनुभूति को गूँथते हुए दिखाई देते हैं। 'कविता का अर्थात्' में परमानंद श्रीवास्तव ने लिखा है-'जब उनके कई समकालीन स्थिति-चित्रों से आगे नहीं बढ़ सके हैं और संतुष्ट हैं, कुमार अंबुज इतिहास में गाथा में समय-मीमांसा में प्रवेश करते हैं। 'वे लताएँ नहीं' कविता में एक पूरी तैयारी है-परंपरा संचित अवरोधों-ग्रंथियों के साथ कविता आने वाले समय की सूचना भी देती है। आवेगों की तीव्रता में उम्मीद की झलक भी मिलती है जब कवि का पर्यवेक्षण प्रकृति में जनपद में लोक में एक धुली छाया से भी शक्ति या रोमांच अनुभव करता है।' [९] आगे की 'धुंध', 'शाम', 'इंतज़ार', 'चमक', 'जब दोस्त के पिता मरे', 'चोट', 'आयुर्वेद' आदि कविताएँ कवि की निजी अनुभूतियाँ और आसपास की ज़िंदगी को बयां करती हैं। 'इस काल में' कविता वर्तमान आपसी संबंधों की हिंसा के स्वरूप का यथार्थ चित्रण करती है। आज हम ऐसे समय में जी रहे हैं जहाँ दुश्मनों से कम अपने सगे-संबंधियों और दोस्तों से ज्यादा खतरा है। "फैल रही है संबंधों की हिंसा/जिन्हें देखना चाहते रहे हम बार-बार/वे आखिरी बार दिखाई दिए किसी को/जाते हुए सुनसान पहाड़ी की तरफ।" [१०]

अंतिम दशक के अन्य कवियों की भाँति कुमार अंबुज ने भी पारिवारिक संवेदना को बड़ी मार्मिकता और वास्तविकता के साथ चित्रित किया है। संयुक्त परिवार के विकेन्द्रीकरण, बाजारवाद, पाश्चात्य संस्कृति आदि के प्रभाव के कारण आपसी खून के रिश्तों में भी बदलाव आ गया है। आज की स्थिति यह है कि जन्मदात्री माँ-बाप भी अपने बेटे के यहाँ अतिथि एवं दूसरे दर्जे के नागरिक की भाँति समझे जाते हैं। यह जीवन की कटु सच्चाई है।

मैं चाहूँ तो भी नहीं रोक सकता माँ को जाने से
भूल चुका हूँ मैं हठ करना
दूर-दूर तक नहीं बची रह गई है मुझमें अबोधता
धीरे-धीरे मैं खुद चला आया हूँ माँ से इतनी दूर
कि मेरे घर में अब
माँ एक अतिथि है।

इसी प्रकार संग्रह की अन्य कविताओं में भी कवि अपने जीवन एवं समसामयिक घटनाओं, बयानों आकलनों,

अवसादों, संशयों आदि को व्यक्त करता है। धूमिल, राजकमल चौधरी, रघुवीर सहाय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना आदि कवियों की राजनीतिक प्रखरता इनकी कविताओं में देखने को नहीं मिलती। कवि बड़ी-से-बड़ी बात को बहुत सहज ढंग से कह जाता है। इससे हमें खरोंच तो लगती है लेकिन बड़े घाव की अनुभूति नहीं होती। 'चरित्रवानों की कथा' कविता इनकी धीर और गम्भीर कथन का परिचायक है।" सबसे पहले वे/जिन्होंने चरित्र को संयम के सहारे ढोया/ और जिनकी पीठ पर सच्चरित्रता के नीले निशान रहे/कथाओं और किताबों में जिनका जिक्र हुआ खूब/इसके बाद बचे रहे दो तरह के चरित्रवान/एक वे/जो सामर्थ्य के अभाव में चरित्र नष्ट न कर सके/दूसरे वे/जो अवसर के अभाव में चरित्रवान बने रहे/शेष/राजनीति में गए।"[१२]

इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ में कवि का चौथा काव्यसंग्रह 'अतिक्रण' (२००२) आया। आलोचना जनवरी-मार्च २००३ में जयप्रकाश ने कवि के उक्त संग्रहों की कविताओं पर टिप्पणी करते हुए लिखा है- 'किवाड़' का कवि अस्सी के दशक की काव्य-मनोभूमि से कविता लिख रहा था। कस्बा, परिवार, घर का आत्मीय दुनिया में मानवीय राग की मौजूदगी को रेखांकित करती उसकी कविता में समय के अंतर्विरोध और उसमें मौजूद अमानवीयकरण की पहचान तो थी किन्तु दृश्य में सक्रिय उन शक्तियों को चिह्नित करने की बेताबी न थी, जिनसे दृश्य की रचना हुई थी। आगे वे लिखते हैं कि 'किवाड़' छपकर जब आया था, नव-साम्राज्यवाद की शक्तियाँ प्रकट होने लगी थीं; आने वाले कुछ ही वर्षों में वे दृश्य पर काबिज हो गईं। उनके वर्चस्व के प्रामाणिक वृत्तांत सबसे पहले कुमार अंबुज के यहाँ 'क्रूरता' में मिले। 'अनंतिम' कविता जैसे हिंसा और उसकी अजेयता को चुनौती देती है। थकान और हताशा को यह अनंतिम घोषित करती है। उस पर आशावाद का लेप लगाती है। मनुष्य की अपराजेयता का एक काव्यात्मक मिथक खड़ा करती है।"[१३] ❑

सन्दर्भ ग्रंथ-सूची

१. केदारनाथ सिंह/किवाड़ काव्यसंग्रह का कवर-पृ.
२. कुमार अम्बुज/किवाड़ काव्यसंग्रह/पृ. २०
३,४,५. वही/वही/पृ. ३१, ३६, ८५
६. वही/क्रूरता काव्यसंग्रह/पृ. २२
७. धर्मवीर भारती/अंधायुग/पृ. २
८. कुमार अंबुज/अनंतिम काव्यसंग्रह-पृ. ६३
९. परमानंद श्रीवास्तव/कविता का अर्थात्/पृ. २४४
१०. कुमार अंबुज/अनंतिम/पृ. ६३
११,१२. वही/वही/पृ. ६६, ७५
१३. नामवर सिंह/आलोचना, जनवरी-मार्च २००३/पृ. ६७, ६८